9
''सर्वसिद्ध'' क्या है?

1 कुरिन्थियों 13:9, 10 वाले ''सर्वसिद्ध'' पर काफ़ी बहस होती है। हमारे सामने समस्या यह है कि पौलुस ने संज्ञा के बिना एक विशेषण का इस्तेमाल किया है। अन्य शब्दों में, पौलुस ने हमारे लिए विशेषकर ''सर्वसिद्ध'' शब्द का अर्थ नहीं बताया, जिस कारण हम अभी तक पूछ रहे हैं कि ''सर्वसिद्ध *क्या* है?'' हमें संदर्भ से ही तय करना होगा कि ''सर्वसिद्ध'' है क्या।

अर्डंट एण्ड गिंगरिक ने यूनानी शब्द *teleios* जिसका अनुवाद ''सर्वसिद्ध'' हुआ है, का अर्थ ''लक्ष्य या उद्देश्य पा चुका, सम्पूर्ण, पूर्ण'' के रूप में किया है।[1] स्पष्टतया पौलुस यह कह रहा था कि सम्पूर्ण और पूर्ण एक दिन ''अधूरे'' (यू.: *meros*) का स्थान ले लेगा। *मिरोस* का अर्थ ''कुछ दर्जे तक,'' ''भाग,'' ''व्यक्तिगत रूप से,'' ''जो 'भाग में'=अधूरा'' के रूप में किया जाता है।[2] इन परिभाषाओं को मिलाने पर हम देख सकते हैं कि पौलुस ''सर्वसिद्ध'' (सम्पूर्ण) की तुलना ''अधूरा'' (अपूर्ण) से कर रहा था। पौलुस की बात को समझाने के लिए, ''समोसे'' को ध्यान में रखकर सोच सकते हैं। समोसे को पूरा (पूर्ण) बनाने के लिए कई तहें लगाई जाती हैं। यदि उन तहों को एक थाली में साथ-साथ रखा जाए, तो वे एक पूरी कचौड़ी (पूर्ण) का भाग हैं। आश्चर्यकर्म से मिले ज्ञान के द्वारा, कलीसिया को ''सच्चाई का एक टुकड़ा'' या एक बार में, आंशिक प्रकाशन ही मिला था। सच्चाई के थोड़ा-थोड़ा कर प्रकट होते रहने और दूसरे लोगों के लिए लिखे जाने से, एक दिन आया, जिसमें यह प्रकाशन ''सर्वसिद्ध और सम्पूर्ण'' हो गया। सच्चाई का वह प्रकाशन जब प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के माध्यम से पूरा हो चुका, तो प्रेरणा देने का माध्यम जिसके द्वारा आश्चर्यकर्म का ज्ञान प्रकट किया गया था, बंद हो गया, यानी यह ''जाता रहा।''

परमेश्वर की सच्चाई का सम्पूर्ण प्रकाशन

अपनी निजी सेवकाई के दौरान, यीशु ने अपने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की थी कि पवित्र आत्मा ''[उन्हें] *सब बातें* सिखाएगा, और *जो कुछ* [उस] ने [उन] से कहा है, वह सब [उन्हें] स्मरण कराएगा''; ''परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें *सब सत्य* का मार्ग बताएगा'' (यूहन्ना 14:26; 16:13)। ''*सब* सत्य'' नये नियम की सच्चाई के *सम्पूर्ण, सर्वसिद्ध* प्रकाशन को कहा गया है। यीशु ने अपने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा उन्हें सिखाएगा और उन पर ''*सब सत्य*'' प्रकट करेगा। पौलुस के समय में, आत्मा परमेश्वर के वचन को ''नियम पर नियम, नियम पर नियम, थोड़ा यहां, थोड़ा

वहां'' (यशायाह 28:10) प्रकट करने का काम कर रहा था। हमारे प्रभु की नई वाचा प्रेरितों और आरम्भिक कलीसिया के भविष्यवक्ताओं पर धीरे-धीरे प्रकट की जा रही थी। पूर्ण होने तक यह छोटे-छोटे भागों में (थोड़ा-थोड़ा करके) सम्पूर्ण प्रकाशन के दिए जाने तक प्रकट की जाती रही है। पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया के नाम पत्र में लिखा, ''क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है और हमारी भविष्यवाणी अधूरी'' (1 कुरिन्थियों 13:9)। परन्तु समय आना था जब यीशु की प्रतिज्ञा के पूरा होने में, ''*सब सत्य*'' (अर्थात पूरी सच्चाई) पूर्ण रूप से, सर्वसिद्ध अवस्था में दिया जाना था। पूर्ण प्रकाशन के दे दिए जाने पर, आश्चर्यकर्म से मिलने वाला ज्ञान दिया जाना बन्द हो जाना था: ''परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा'' (1 कुरिन्थियों 13:10)।

पहली शताब्दी के अन्त तक, परमेश्वर का सच्चाई का प्रकाशन पूरा हो चुका था। परमेश्वर का वचन ''आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया है'' (इफिसियों 3:5)। सच्चाई का यह प्रकाशन अब वही आधार है, जिस पर हमारे प्रभु की कलीसिया बनी है (इफिसियों 2:20)। ''विश्वास ... पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया [है]'' (यहूदा 3), इसलिए परमेश्वर के सम्पूर्ण और सर्वसिद्ध प्रकाशन में जोड़ना परमेश्वर के न्याय को निमन्त्रण देना है। प्रकाशितवाक्य 22:18 कहता है, ''परमेश्वर उन विपत्तियों को, जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा।''

परमेश्वर की कलीसिया की पूरी तरह से विकसित प्रौढ़ता

आत्मिक दानों के बारे में एक और जगह, पौलुस ने घोषणा की कि यीशु ने ''कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यवक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुनाने वाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि ... परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएं।'' पौलुस ने आगे जोड़ा कि आत्मिक परिपक्वता का अन्तिम लक्ष्य ''प्रेम में अपने आप को बढ़ाते हुए देह का विकास'' करना है (इफिसियों 4:11-13, 16)। उस लक्ष्य के लिए, परमेश्वर ने मसीह की देह में आत्मिक दानों वाले योग्य लोगों को रखा है। ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं'' को परमेश्वर की प्रेरणा से आश्चर्यकर्म के दान मिले, जिनके द्वारा परमेश्वर का वचन दिया गया। ''सुसमाचार सुनाने वालों अर्थात इवैंजलिस्टों, चरवाहों और सिखाने वालों'' के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए वचन में से ही प्रचार करना आवश्यक है ''जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया है'' (इफिसियों 3:5)। जब आश्चर्यकर्म से प्रकट किया गया, परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन सुनाया जाता है, तो पवित्र लोग भले कामों के लिए सिद्ध होते हैं, और मसीह की देह ''विश्वास की एकता'' में उन्नति करती है (इफिसियों 4:11-13)।

अपने पवित्र आत्मा तथा अपनी प्रेरणा से दिए गए वचन के द्वारा, परमेश्वर ने ''हमारे

प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में'' (2 पतरस 3:18) बढ़ने के लिए अपने बच्चों को हर आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवाया है। जब परमेश्वर का वचन कलीसिया को सौंपे जाने की प्रक्रिया चल रही थी, तो आश्चर्यकर्म के दानों ने महत्वपूर्ण कार्य किया, जिनके द्वारा पवित्र आत्मा ने अगुआई तथा निर्देश का अपना संदेश दिया। ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं'' को मिले आश्चर्यकर्म के दानों के द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा से वचन दिया गया और स्वयं प्रभु द्वारा एक ही बार सदा के लिए इसकी पुष्टि की गई (इब्रानियों 2:4)। अब जबकि कलीसिया के पास सम्पूर्ण, लिखित वचन है, तो इसे आश्चर्यकर्म के दानों की आवश्यकता नहीं है। मसीही लोगों को परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए सच्चाई के संदेश पर विश्वास करने की आवश्यकता है (इफिसियों 2:20)।

कुरिन्थुस में सांसारिकता

आत्मिक दानों के इस्तेमाल में कुरिन्थुस में अपरिपक्वता की समस्या थी। कई लोग स्वार्थी थे और उनके लिए ''बच्चों जैसी बातों'' को छोड़ना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 13:11)। पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के नाम भाइयों को आज्ञा देते हुए यही संदेश लिखा कि ''आगे को बालक न रहें'' (इफिसियों 4:14)। उस ने हर मसीही को एक सिद्ध मनुष्य बनने और मसीह के पूरे डील-डौल तक बढ़ने का आग्रह किया (इफिसियों 4:13)। पौलुस चाहता था कि कुरिन्थुस और इफिसुस की कलीसियाएं ''हर पहलू से बढ़ें'' और प्रेम करना सीखें ताकि मसीह की आत्मिक देह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार एकता और सिद्धता में कार्य करे (इफिसियों 4:15, 16)।

भविष्यवाणी द्वारा प्रकट किया गया परमेश्वर का वचन इतना सामर्थी है कि यह कलीसिया को मसीह के प्रेम में बढ़ा सकता है। कुरिन्थुस के लोगों को बच्चों जैसी हरकतें छोड़कर उन दानों का इस्तेमाल सिखाने और दूसरों को समझाने के लिए करना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 14:31)। परमेश्वर के वचन को सीखने की प्रक्रिया में, कलीसिया ने एक दूसरे को सिखाना और सुधारना था। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, पौलुस ने आज्ञा दी, ''इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो, कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो'' (1 कुरिन्थियों 14:12; तुलना आयतें 26, 31)।

दर्पण के रूप में संदेश

1 कुरिन्थियों 13 में प्रेम पर अपनी चर्चा समाप्त करते हुए, पौलुस ने परमेश्वर के वचन की तुलना एक दर्पण से की (आयत 12)। 2 कुरिन्थियों 3:18 में उसने इसी तुलना का इस्तेमाल किया। ''परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।'' जब हम परमेश्वर के वचन में दिखाई गई यीशु की महिमा पर ध्यान करते हैं, तो हम इसके स्वरूप में ढलते जाते हैं।

परमेश्वर के प्रेम की पूरी झलक

एक दिन हम परमेश्वर के प्रेम की सम्पूर्ण महिमा को ''आमने-सामने'' देखेंगे। तब, जैसा कि पौलुस ने कहा, हम ''पूरी तरह जानेंगे'' जैसे हम ''पहचाने गए हैं'' (1 कुरिन्थियों 13:12)। आज हम परमेश्वर के जीवित वचन के द्वारा ''जाने गए'' हैं, जो ''मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है और सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है, वरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं'' (इब्रानियों 4:12, 13)। 1 कुरिन्थियों 13 में पौलुस की शिक्षा से यह सुझाव मिलता है कि परमेश्वर के वचन का दर्पण यीशु के प्रेम को दर्शाता है। सच्चाई के पूर्ण प्रकाशन से पहले, आरम्भिक मसीही उसके प्रेम को ''धुंधला'' सा ही देख सकते थे। बाद में, सच्चाई के सम्पूर्ण प्रकाशन के द्वारा, वे परमेश्वर के वचन के दर्पण में उसके प्रेम की महिमा की पूरी झलक देख सकते थे। अन्त में वह दिन आ ही जाएगा, जब हम उसकी महिमा की सम्पूर्णता ''आमने-सामने'' देखेंगे और उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानेंगे, जैसे हम पहचाने गए हैं (1 कुरिन्थियों 13:12)। हम पढ़ते हैं, ''हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की संतान हैं, और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रकट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2)। उस महिमामय दिन पर, हर रहस्य खत्म हो जाएगा। उस दिन से विश्वास और आशा जाती रहेगी, पर प्रेम नहीं टलेगा। पौलुस ने निष्कर्ष निकाला, ''पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में से बड़ा प्रेम है'' (1 कुरिन्थयों 13:13)।

सारांश

हर मसीही का लक्ष्य यीशु जैसा बनना है, जो कि सिद्ध प्रेम है (1 यूहन्ना 4:16)। परमेश्वर और उसके अनुग्रह का वचन हमें उसके प्रेम में स्थिर कर सकता है (प्रेरितों 20:32)। पौलुस के कुरिन्थुस की कलीसिया के नाम लिखते समय, पवित्र आत्मा भविष्यवाणी के दान के द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा से वचन को अभी भी दे रहा था। पौलुस ने भविष्यवाणी को कलीसिया को सुधारने (बनाने) के लिए उत्तम दान कहा (1 कुरिन्थियों 14:1, 4)। भाषाओं से कलीसिया का सुधार तभी हो सकता था, जब उनका अनुवाद हो (1 कुरिन्थियों 14:5), सो पौलुस ने भाषाएं बोलने वाले को कहा कि अनुवादक होने पर ही बोलें (आयत 28)। भविष्यवाणी और भाषाओं (जिनका अनुवाद होता था) के दान के द्वारा सच्चाई प्रकट की जाती थी ताकि ''सब सीखें और सब शांति पाएं'' (आयत 31)। पौलुस ने घोषणा की कि परमेश्वर का सम्पूर्ण और सर्वसिद्ध वचन दे दिए जाने के बाद, भविष्यवाणी, भाषाओं और आश्चर्यकर्मों के दान, परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया ज्ञान जाता रहेगा (1 कुरिन्थियों 13:8-10)। प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं को आश्चर्यकर्म के द्वारा अगुआई के स्थान पर, परमेश्वर के वचन का सम्पूर्ण प्रकाशन वह आधार होना था, जिस पर कलीसिया प्रेम में और सम्पूर्ण रूप से बननी थी। परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए वचन के द्वारा देह को बनाना ऐसी प्रक्रिया है, जो यीशु के प्रेम की सिद्ध महिमा के ''आमने-सामने''

देखने तक जब हम ''वैसे ही पहचानेंगे जैसे हम पहचाने गए हैं'' चलती रहेगी।

इस पर विचार करें: परमेश्वर चाहता है कि हमारे मन उसके सिद्ध प्रेम से उमड़ते रहें ताकि हम वे माध्यम बन सकें, जिनके द्वारा उसका प्रेम हमारे साथियों के जीवनों तक पहुंच सके। हमारे अन्दर इस काम को करने की पवित्र आत्मा की इच्छा यह है कि हम में से हर एक उसके सिद्ध प्रेम की पूर्ण महिमा को पा लें। ''और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है'' (1 यूहन्ना 3:3)। आमीन!

टिप्पणियां

[1]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिटरेचर,* संशो., विलियम एफ़. अर्डंट एण्ड एफ़. विल्बर गिंगरिक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 816. [2]वही, 507.